प्रज्ञा
प्रस्ताव
नारी
प्रबंध
व्यवस्था
राजनीति
वाद
विवाद
शासन
गरीबी
धर्म

प्रज्ञा (प्रथम संस्करण)

समीक्षा

हिंदी वाद-विवाद समिति

(गार्गी महाविद्यालय)

2019-20

@sameekshadebsoc234

@sameekshadebsoc_19

सोसायटी यूनियन

2019-20

शिक्षक-गण

डॉ. पार्वती शर्मा
(शिक्षक संयोजिका)

डॉ. मीना
(शिक्षक सह-संयोजिका)

सोसायटी यूनियन

2019-20

दीपांशी गुप्ता
(अध्यक्षा)

खुशबू
(उपाध्यक्षा)

ऋषिका रस्तोगी

(कोषाध्यक्षा)

समीक्षा परिवार के सदस्य

१ अनुभूति जैन - बी.ए. प्रोग्राम (प्रथम)

२ ईशा अग्रवाल - बीएससी भौतिक विज्ञान (प्रथम)

३ पूजा - बी.कॉम ऑनर्स (प्रथम)

४ बबली शर्मा - बी.ए. ऑनर्स हिंदी (प्रथम)

५ मितिक्षा गुप्ता - बीएससी ऑनर्स जूलॉजी (प्रथम)

६ संजीवनी खन्ना - बी.कॉम ऑनर्स (प्रथम)

७ सीता प्रजापति - बीएससी ऑनर्स जूलॉजी (प्रथम)

८ हेमांगी तक - बी.ए. प्रोग्राम (प्रथम)

९ श्रेया शाह - बी.कॉम प्रोग्राम (प्रथम)

१० आलिया सैफी - बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (द्वितीय)

११ कनिका गुसाईं - बी.ए ऑनर्स अर्थशास्त्र (द्वितीय)

१२ खुशबू - बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (द्वितीय)

१३ दिव्यांशी पांडेय- बी.ए ऑनर्स हिंदी (द्वितीय)

१४ नीलम नेगी - बीएससी भौतिक विज्ञान (द्वितीय)

१५ प्रिया कुमारी - बी.ए. ऑनर्स हिंदी (द्वितीय)

१६ शिवानी बंसल - बीकॉम ऑनर्स (द्वितीय)

१७ मधु - बी.ए. प्रोग्राम (द्वितीय)

१८ मीनाक्षी उपाध्याय (द्वितीय)

१९ विद्या - बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (द्वितीय)

२० शारदा- बी.ए. प्रोग्राम (द्वितीय)

२१ ऋषिका रस्तोगी - बी.कॉम. ऑनर्स (द्वितीय)

२२ छाया - बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (तृतीय)

२३ दीपांशी गुप्ता - बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (तृतीय)

२४ बिंदु - बीएससी ऑनर्स रसायन विज्ञान (तृतीय)

२५ वर्षा - बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (तृतीय)

२६ शिवानी सिंह - बी.ए. ऑनर्स इतिहास (तृतीय)

गुरुजनों की कलम से

उद्‌बोधन व आशीर्वाद

- डॉ. पार्वती शर्मा

विद्‌यार्थियों,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हो रहा है कि आपके प्रयासों द्‌वारा 'समीक्षा वाद-विवाद समिति' की ओर से ई-पत्रिका अब प्रकाशित करने की योजना है। वस्तुतः लेखन कार्य हमें अपने परिवेश,परिस्थितियों और सामाजिक चिंतन से जोड़े रखता है। यदि पढ़ना एक ऋण है तो लिखना उस ऋण की अदायगी है। समीक्षा द्‌वारा प्रस्तावित ई-पत्रिका का उद्‌देश्य है कि सभी लोग लेखन कार्य से जुड़े एवं अपने पारस्परिक विचारों को साझा भी करें जिससे किसी के भी चिंतन मनन की प्रक्रिया अवरुद्‌ध न हो| वर्तमान समय में हमें ई-संसाधनों के समुचित उपयोग की ओर अग्रसर करने का यह आपके द्‌वारा एक सराहनीय प्रयास है, इसलिए इन प्रयासों द्‌वारा अधिसंख्य विद्‌यार्थियों के मध्य लेख, कहानी, समसामयिक कविताएँ, चिंतन के विविध रूप लिखे जाएं और वह जनसमाज तक पहुँच कर लेखन कार्य से जुड़े पाठकों के मध्य नवीन आयाम भी स्थापित कर सकते हैं। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं आप सभी को माँगलिक आशीर्वाद के साथ इस ई-पत्रिका के सुखद और उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

ई-पत्रिका 'प्रज्ञा': एक सराहनीय कदम

- डॉ. मीना

समीक्षा गार्गी महाविद्यालय की एक सक्रिय वाद-विवाद समिति है। यह एक ऐसा मंच है जो अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं के विद्यार्थियों का तमाम प्रतियोगिताओं में भरपूर सहयोग रहता है। यह समिति अपने विचारों और स्वस्थ विमर्शों से तर्क और मौलिकता के साथ अपने नए विचारों और आधारों का निर्माण करती है जो उनके व्यक्तित्व के विकास में एक रचनात्मक भूमिका निभाती है। अभिव्यक्ति विचारों का एक ऐसा सुंदर धरातल है जो विचारों में परिवर्तन को एक नया आधार देता है। इसी अभिव्यक्ति, विचार और परिवर्तनों के आग्रह के साथ ही हिंदी वाद-विवाद समिति पहली बार प्रस्तुत कर रही है अपनी ई-पत्रिका। यह पत्रिका विद्यार्थियों को एक सार्थक और मज़बूत मंच देने के साथ-साथ उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित कर अवसर प्रदान करेगी। मैं बड़े ही गर्व के साथ 'प्रज्ञा' के नाम से प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका व इसकी पूरी टीम और हिंदी वाद-विवाद के पूरे परिवार को अपनी समस्त शुभकामनाएँ और मंगलकामनाएँ देती हूँ। विद्यार्थियों द्वारा पत्रिका की यात्रा का यह प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय है। पत्रिका के रूप में नयी सोच, नयी कल्पनाएँ विद्यार्थियों में एक नया उत्साह भरने का काम करेगी, ऐसी मेरी कामना है। 'अच्छी सोच' नामक मेरी कविता की पंक्तियां कहती हैं -

अच्छी सोच जीवन को सँवारती है ।
अच्छी सोच कल्पनाओं को, नए विचारों को जन्म देती है ।
अच्छी सोच सृजन क्षमता को बढ़ाती है ।
अच्छी सोच सम्मान दिलाती है ।
अच्छी सोच सपनों को पंख देती है ।
अच्छी सोच ज्ञान का भण्डार है ।
अच्छी सोच बुरे समय और कुबुद्धि को हरती है ।
अच्छी सोच टूटे रिश्तों को मिठास देती है ।
अच्छी सोच घावों को भरती है ।
अच्छी सोच अच्छाई को ही दर्शाती है
इसलिए अच्छी सोच अनमोल होती है ।
अच्छी सोच को जिसने जाना
जीवन की सच्चाई को उसी ने जाना ।

याद आ रही है हिंदी साहित्य के पुरोधा रचनाकार प्रेमचंद की कुछ पंक्तियां - उनका मानना था कि साहित्य वही है जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, ज्ञान से भरपूर हो, सृजन की क्षमता हो, जीवन की सच्चाईयों का प्रकाश हो, जो हममें गति संघर्ष और बेचैनी पैदा करे। इन्हीं गुणों को उभारते हुए यह पत्रिका आज हम सबके समक्ष है।

२०१९-२०२० के पुरस्कार

दीपांशी गुप्ता

पुरस्कार

१. राजीव गांधी स्टडी सर्किल द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद में सांत्वना पुरस्कार।

२. रामजस महाविद्यालय द्वारा आयोजित नवागंतुक संसदीय वाद-विवाद में निर्णायक की भूमिका में क्वार्टर फाइनलिस्ट।

३. शिवाजी महाविद्यालय द्वारा आयोजित भोंसले संसदीय वाद-विवाद में क्वार्टर फाइनलिस्ट।

४. श्याम लाल महाविद्यालय द्वारा आयोजित मॉडल यूनाइटेड नेशन्स (स्टेकहोल्डर्स मीट) में रघुराम राजन के पोर्टफोलियो में तृतीय पुरस्कर।

५. श्री अरबिंदो महाविद्यालय द्वारा आयोजित युवा संसद (लोक सभा) में अमित शाह के पोर्टफोलियो में सांत्वना पुरस्कार।

६. भारत स्पेन युवा फ़ोरम द्वारा आयोजित मॉक डिप्लोमेसी में निर्मला सीतारमण के पोर्टफोलियो में सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि (सर्वश्रेष्ठ वक्ता) का पुरस्कार।

७. ज़ाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद-विवाद में सेमी फाइनलिस्ट।

८. श्री अरबिंदो महाविद्यालय द्वारा आयोजित सामूहिक चर्चा में द्वितीय स्थान।

९. श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद-विवाद में सेमी फाइनलिस्ट।

१०. किरोड़ी मल महाविद्यालय द्वारा आयोजित नरेंद्र सिंह प्रधान संसदीय वाद-विवाद में क्वार्टर फाइनलिस्ट।

११. हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित नेशनल वाद-विवाद प्रतियोगिता में क्वार्टर फाइनलिस्ट।

१२. श्री अरबिंदो कॉलेज द्वारा आयोजित राष्ट्रीय ओपन माइक (भाषण) प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

१३. कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

विशेष उपलब्धियां

२४-२५ अक्टूबर को शहीद भगत सिंह (सांध्य) महाविद्यालय द्वारा आयोजत नवागंतुक संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में दीपांशी गुप्ता को मुख्य निर्णायक की भूमिका अदा की।

०३ नवंबर को राष्ट्रीय सेवा योजना, गार्गी महाविद्यालय द्वारा आयोजित सामूहिक चर्चा में दीपांशी गुप्ता ने मुख्य निर्णायक की भूमिका अदा की।

खुशबू

१. रामजस महाविद्यालय द्वारा आयोजित नवागंतुक संसदीय वाद-विवाद में निर्णायक की भूमिका में क्वार्टर फाइनलिस्ट।
२. शिवाजी महाविद्यालय द्वारा आयोजित भोंसले संसदीय वाद-विवाद में क्वार्टर फाइनलिस्ट।
३. शाहिद भगत सिंह (संध्य) महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
४. ज़ाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद-विवाद में सेमी फाइनलिस्ट।
५. श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद-विवाद में क्वार्टर फाइनलिस्ट।
६.दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
७. हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित नेशनल वाद-विवाद प्रतियोगिता में सेमी फाइनलिस्ट।
८. राइटर्स वर्कस्पेस द्वारा आयोजित राष्ट्रीय भाषण वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
९. शहीद भगत सिंह (सांध्य) महाविद्यालय द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

ऋषिका रस्तोगी

१. दयाल सिंह महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ टीम का पुरस्कार।
२. गार्गी महाविद्यालय (एनटीपीसीएल) द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
३. कमला नेहरु महाविद्यालय द्वारा आयोजित सामूहिक चर्चा में सांत्वना पुरस्कार।
४. जीसस एंड मैरी कॉलेज द्वारा आयोजित टर्नकोट प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
५. हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वाद विवाद प्रतियोगिता में सेमी फाइनलिस्ट।

मितिक्षा गुप्ता

१. देशबंधु कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद में सर्वश्रेष्ठ दल का पुरस्कार।
२. भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।
३. गलगोटिया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित द्वि-स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार|
४. स्वामी विवेकानंद युवा संसद द्वारा आयोजित ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार।

अनुभूति जैन

१.शहीद भगत सिंह महाविद्यालय (संध्या) द्वारा आयोजित द्वि-दिवसीय नवागंतुक हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता में सेमी फाइनलिस्ट।

२. दयाल सिंह महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद में प्रथम पुरस्कार।

३. हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित नेशनल वाद-विवाद प्रतियोगिता में क्वार्टर फाइनलिस्ट।

मीनाक्षी उपाध्याय

१. गार्गी महाविद्यालय (एनटीपीसीएल) द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार |

२. कमला नेहरू महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार |

३. राजधानी कॉलेज द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में उपविजेता।

ईशा अग्रवाल

१. दयाल सिंह महाविद्यलय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता का पुरस्कार।

२. दयाल सिंह महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक कम संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में क्वार्टर फाइनलिस्ट।

दिव्यांशी पांडेय

१. श्री अरबिंदो महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्न कर्ता का पुरस्कार।

२. हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वाद विवाद प्रतियोगिता में क्वॉर्टर फाइनलिस्ट।

प्रिया

१. दयाल सिंह महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद में प्रथम पुरस्कार |

२. लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर विमेन (एन.सी.सी) द्वारा आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार |

मधु

१. गार्गी महाविद्यालय (गांधी स्टडी सर्किल) द्वारा आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्न कर्ता का पुरस्कार ।

२. गार्गी महाविद्यालय (गांधी स्टडी सर्किल) द्वारा आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ टीम का पुरस्कार।

शिवानी सिंह

१. श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद-विवाद में सेमी फाइनलिस्ट|
२. दिल्ली कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एवं कॉमर्स द्वारा आयोजित संसदीय वाद-विवाद में निर्णायक की भूमिका में क्वार्टर फाइनलिस्ट|

हेमांगी तक

१. देशबंधु महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद में तृतीय पुरस्कार।
२. दयाल सिंह महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक कम संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में क्वार्टर फाइनलिस्ट।

कनिका गुसाईं

अनुभूति एवं हिंदी विभाग (गार्गी महाविद्यालय) द्वारा आयोजित हिंदी सप्ताह' 2020 में हुई आशुभाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार|

छाया

लेडी इरविन कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता।

वर्षा

दयाल सिंह महाविद्यालय द्वारा पारंपरिक वाद-विवाद में प्रथम पुरस्कार |

शारदा यादव

गार्गी महाविद्यालय (गांधी स्टडी सर्किल) द्वारा आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ टीम का पुरस्कार।

संजीवनी खन्ना

गार्गी महाविद्यालय द्वारा आयोजित सामूहिक चर्चा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

सीता प्रजापति

हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वाद विवाद प्रतियोगिता में क्वॉर्टर फाइनलिस्ट।

श्रेया शाह

शहीद भगत सिंह (सांध्य) महाविद्यालय द्वारा आयोजित द्वि-दिवसीय नवागंतुक हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता में सेमी फाइनलिस्ट|

समीक्षा के सदस्यों द्वारा वर्ष-भर में विभिन्न संस्थानों में आयोजित १०० से अधिक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लिया गया। भाषण, आशुभाषण, टर्नकोट, युवा-संसद, पारंपरिक व संसदीय वाद-विवाद आदि प्रकार की प्रतियोगिताओं में ४७ से अधिक पुरस्कार जीते गए, जो कि बड़े गौरव की बात है। इसके अतिरिक्त सदस्यों द्वारा गैर वाद विवाद प्रतियोगिताओं जैसे कि काव्य पाठ, रंगोली निर्माण, आदर्श वाक्य लेखन, फ़िल्म विश्लेषण प्रस्तुतीकरण, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी, फोटोग्राफी प्रतियोगिता इत्यादि में लगभग २० पुरस्कार प्राप्त किए गए।

कार्यक्रमों की एक झलक

अन्वेषण'19

संसदीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (छठा संस्करण)

03-04 नवंबर 2019 को "अन्वेषण" संसदीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का छठा संस्करण आयोजित किया गया| निर्णायक मंडल व प्रतिभागियों की तरफ से यह सूचना मिली है कि उन्हें समीक्षा समिति के प्रबंधन बहुत ही सार्थक लगे एवं सभी प्रतियोगिताएँ अपनी मर्यादा से संपन्न हुई| अनुशासन उल्लंघन नहीं देखा गया| डिबेटिंग सर्किट के कुछ प्रतिष्ठित निर्णायक शामिल रहे जैसे- **श्री राहुल दुबे, जस्टिस सौरभ पाण्डेय सर, दीपांशी सिंह** आदि| उनका अनुभव भी काफी अच्छा रहा| **फैकल्टी ऑफ सोशल साइंस** विजेता एवं **शहीद भगत सिंह (सांध्य)** उपविजेता रहें| इसी के साथ **अंबेडकर क्रॉस और रामजस कॉलेज** ने सेमीफाइनल में अपनी जगह बनाई| स्थान के अनुसार उन्हें पुरस्कार स्वरुप ट्रॉफी तथा धनराशि प्रदान की गई|

अंत में समिति की अध्यक्षा **दीपांशी गुप्ता** जी ने सभी को अन्वेषण'19 में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने हेतु तथा प्रतियोगिता की सफलता हेतु धन्यवाद अर्पित किया| इस प्रकार वर्ष 2019 की संसदीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न रहा|

वार्षिकोत्सव

REVERIE'20

०४-०५ फरवरी 2020 को समीक्षा ने गार्गी महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव रेवरी'२० पर पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा द्वि-स्तरीय प्रतियोगिता (भाषण एवं टर्नकोर्ट) का आयोजन किया। पहले दिन लगभग 17 दलों ने तथा दूसरे दिन लगभग 27 प्रतिभागियों ने प्रस्तुत प्रतियोगिता में भाग लिया|इस शुभ अवसर पर हमारे समक्ष **विशिष्ट अतिथि व निर्णायक** के रूप में पहले दिन **डॉ. मधु कौशिक** तथा दूसरे दिन **डॉ. संगीता** उपस्थित रहीं|

मंच संचालक द्वारा अतिथियों का परिचय सभी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसी के साथ प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ तथा सभी प्रतिभागियों ने क्रमानुसार अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। वातावरण रोचक तथा उत्सुकता से परिपूर्ण था। सभी प्रतिभागियों के वक्तव्य के पश्चात तथा परिणाम घोषित होने से पूर्व समय के अंतराल में कुछ प्रतिभागियों द्वारा अत्यधिक रोचक कविताओं का पाठ किया गया जिसे सुनकर वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति हर्ष व उल्लास से परिपूर्ण हो गया था। अंत में निर्णायक-गण ने स्थापित विषयों के संदर्भ में चर्चा करने के साथ-साथ अपने विचार भी प्रस्तुत किए। इसके पश्चात परिणाम की घोषणा हुई जिसमें पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता के प्रथम विजेता **रामानुजन कॉलेज**, द्वितीय विजेता- **हिंदू कॉलेज** तथा सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता **किरोड़ीमल कॉलेज** से रहे; द्वि-स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार **मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय (सांध्य)**, द्वितीय पुरस्कार **देशबंधु कॉलेज** तथा तृतीय पुरस्कार **इग्नू** द्वारा प्राप्त किया गया।

अन्य कार्यक्रम

शैक्षिक सत्र **2019-20** समीक्षा: हिंदी वाद-विवाद समिति के लिए बहुत उपलब्धियों भरा रहा। सत्र की शुरुआत हुई 'उन्मुखीकरण-सह-कार्यशाला' के आयोजन से जिसमें नये सदस्यों को समीक्षा समिति से परिचित करवाया गया। सितंबर में सदस्यों को वाद-विवाद की युक्तियां व कौशल सिखाने के लिए कार्यशाला हुई जिसमें 'दीपांशी सिंह', डिबेटिंग सर्किट की प्रतिष्ठित वक्ता, मुख्य अतिथि रहीं।

संस्कृति मंत्रालय की सहकार्यता में पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसके पश्चात **QED** के साथ मिलकर अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया|

सदस्यों की कलम से

हिंदी पर हाय-हाय छोड़िए

- छाया

भाषाएँ और बोलियां उन रिश्तेदारों की तरह होती हैं जिन्हें थोपा नहीं बल्कि अपनाया जाता है।

हमारे हिंदुस्तान ने तो आज़ादी से पहले ही इसका स्वाद चख लिया था। 1937 में जब मद्रास प्रेसीडेंसी में कांग्रेस की सरकार गठित हुई तो सी. राजगोपालाचारी ने स्कूलों में हिंदी की शिक्षा अनिवार्य कर दी। पेरियार और तमाम तमिलवादी नेताओं ने उसका मुख्य रूप से विरोध किया। आंदोलन उग्र हो चला। पुलिस को कई जगह बल प्रयोग करना पड़ा। एकाधिक व्यक्ति को जान भी गंवानी पड़ी। तब से अब तक इस प्रदेश में तमिल पार्टियां हिंदी का विरोध करती आई हैं।

हमारी संसद तक इस हंगामे से अछूती नहीं रही। लम्बी बहस के बाद 1968 में 'आधिकारिक भाषा संकल्प' (ऑफिशियल लैंग्वेज रिजॉल्यूशन) पारित किया गया। इसके तहत हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी के साथ कोई अन्य भारतीय भाषा पढ़ाई जानी थी और अहिंदीभाषी राज्यों में स्थानीय भाषा और अंग्रेजी के साथ हिंदी का पठन-पाठन होना था। यह त्रिभाषा सूत्र पूरे देश ने अपनाया, पर तमिल नाडु अपनी जिद्द पर अड़ा रहा। यकीनन, भारतीयों को भारत के और अधिक नजदीक लाने के लिए यह कारगर फार्मूला था।

मौजूदा समय में अगर देखें तो, सियासत भाषाओं के मामले में हमेशा एक कदम आगे और दो कदम पीछे की नीति अपनाती रही है। इसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ा है| हमारी पीढ़ी के हिंदी भाषी जब आंखें खोल रहे थे, तभी लोहिया ने- 'अंग्रेजी हटाओ' आंदोलन की शुरुआत की थी। तमाम लोग भावना वश अंग्रेजी का बहिष्कार कर बैठे। सुनने में अच्छा लगता था कि सोवियत संघ, चीन, फ्रांस, जर्मनी ने अगर बिना अंग्रेजी के इतनी तरक्की कर ली, तो हिंदुस्तान हिंदी के साथ आगे क्यों नहीं बढ़ सकता, पर इसका नुकसान हुआ। अल्प अंग्रेजी ज्ञान की वजह से हिंदी भाषियों को रोटी-रोजगार के कई मोर्चों पर आगे चलकर जटिलताओं का सामना करना पड़ा। ठीक वैसे ही, जैसे तमिल-भाषी जब दिल्ली अथवा देश के उत्तरी या पश्चिमी हिस्सों में जाते, तो उन्हें कर्नाटक अथवा अविभाजित आंध्र के मुकाबले अधिक दिक्कत आती थी। हम अपनी भाषा पर गर्व करें, उससे प्यार करें, यह बहुत अच्छा है, पर अगर हम अन्य भाषाओं के लिए दरवाजे बंद कर देंगे तो ज्ञान की उम्मीदों की रोशनी भी बंद हो जाएगी।

2011 की जनगणना के आंकड़े इस मामले में आंखें खोलने वाले हैं। जारी दशक की शुरुआत में देश में हिंदी बोलने वालों की तादाद 52 करोड़ को पार कर गई थी। 2001 से 2011 के बीच इसमें करीब 10 करोड़ का इजाफा हुआ था। अब अगली जनगणना 2021 में होगी पर यह तय है कि बढ़ोतरी की रफ्तार जारी रहेगी। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि लोगों ने रोजगार के सिलसिले में अपने पुराने आग्रहों को तोड़कर नए बनते-उभरते महानगरों की ओर रुख किया है। जनगणना के पिछले आंकड़ों के अनुसार, दक्षिणी क्षेत्रों में हिंदी, उड़िया और असमिया भाषा बोलने वालों की संख्या 33 फीसदी तक बढ़ी है। जाहिर है, हैदराबाद, बेंगलुरु, चेन्नई जैसे शहरों के वाणिज्यिक उभार के बाद देश के पूर्वी और उत्तरी लोगों की आमद में इजाफा हुआ है।

भाषाओं के मामले में होने वाले अकादमिक बहस में एक सत्य अक्सर जानबूझकर भुला दिया जाता है, वह है बॉलीवुड की फिल्में। मुंबई में बनने वाली हिंदी फिल्मों ने अपनी कला और आकर्षण से पूरे देश में हिंदी के प्रसार में जबरदस्त भूमिका अदा की। एक समय था, जब हम रजनीकांत, मोहनलाल, रेखा,

हेमा मालिनी, श्रीदेवी जैसे अभिनेता-अभिनेत्रियों को फिल्मों के जरिए जान सकें। अब वक्त के बदलाव के साथ दक्षिण का सिनेमा भी हमारे बीच लोकप्रिय हो रहा है। बाहुबली हिंदी में भी डब हुई थी और उसने कमाई के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए।

स्पष्ट है कि भाषाओं का काफिला अपने तरीके से बढ़ा है और ऐसे ही बढ़ता जाएगा। हम भारतीयों को कम से कम इस मामले में अपने नेताओं की कोई जरूरत नहीं है। जरूरत है तो बस भाषाओं के प्रति सम्मान से देखने की और नजरिया बदलने की।

नए दौर की ओर चलते हैं।

- ईशा अग्रवाल

एक नए दौर की ओर चलते हैं ,
पर पहले वर्तमान को समझते हैं।

आदिकाल से लेकर आज तक हम सब ने एक देवता का नाम तो अवश्य सुना है "समाज", जी हाँ देवता 'समाज' क्योंकि समाज की परवाह, उसका डर, उसकी मर्यादा हमारे लिए किसी देवता से भी अधिक महत्त्व रखती है। लेकिन समाज को देवता मानने में दोष कैसा? जब तक समाज में स्त्री और पुरुष को सामान्य दर्जा दिया जाए तब तक कोई अपराध नहीं, लेकिन हमारी समझ, हमारी मर्यादा कुछ भिन्न है| कहते है पुरुष और महिला रथ के दो पहियों की तरह होते है फिर हमारे समाज ने एक पहिए को बड़ा और दूसरे पहिए को छोटा क्यों बनाया हुआ है? क्या असमान पहियों द्वारा सुखमय जीवन का रथ चलाया जा सकता है? क्या बिना अग्नि के दीपक जलाया जा सकता है? तो फिर क्यों आज भी हमारे समाज के ८०% लोग महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा नहीं दे पाए है? क्यों आज भी एक लड़की को कितना हँसना है, कितना रोना है, कैसे चलना है, इस सबका विश्लेषण करना पड़ता है? क्यों कुछ भी करने से पहले हमें यह सोचना होता है कि समाज क्या सोचेगा? क्यों आज भी जब एक लड़की का बलात्कार होता है तो १०० उंगलियां उसके ऊपर ही उठाई जाती है? क्यों आज भी इस समाज में बलात्कार का ज़िम्मेदार एक लड़की के छोटे कपड़ों को ही माना जाता है? क्यों लड़की को आगे बढ़ता देखकर लड़के के अहंकार को चोट लग जाती है? क्यों हमारी परंपराओं और रीतियों में पुरुषों को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है? क्यों आज भी लड़की को उसके मोटे-छोटे, काली-गोरी व कपड़ों के आधारों पर आका जाता है। क्यों एक काली लड़की को सौंदर्य उत्पाद के नुस्खे दिए जाते हैं, क्यों एक मोटी लड़की को कसरत की सलाह दी जाती है? और तो और किसी लंबी बीमारी से ग्रसित लड़की को यह कहकर और भी डरा दिया जाता है कि अब उसकी शादी कैसे होगी! परन्तु क्या इस सब में दोष समाज में जन्म लेने वाले पुरुषों का है? मेरे हिसाब से नहीं, एक महिला जब एक पुरुष को जन्म देती है तो उसको किस प्रकार की आकृति देनी है ये महिला के हाथ में होता है लेकिन अपने हालातों से समझौता कर कर वह ऐसा नहीं करती। लेकिन क्या सिर्फ एक महिला के अपनी सोच में परिवर्तन करने से नया दौर आएगा? नहीं समाज में परिवर्तन लाने के लिए सबको सहयोग देना होगा व सोच को बदलना होगा जो हमें सही को सही और ग़लत को गलत कहने से रोकती है। अगर महिलाएँ अपनी स्थितियों का कारण नियति को देना बंद कर उन पर रोना छोड़ उनसे लड़े तो अवश्य ही नया दौर आएगा व समाज बदलेगा, परंपराएँ बदलेंगी, स्थितियाँ बदलेंगी परन्तु इसमें पहला कदम महिलाओं को ही उठाना होगा।

धर्म ही नारी की बेड़ियाँ?

- दिव्यांशी पांडेय

नारी प्रकृति की अनुपम कृति है। उसे दया, करुणा, संवेदना, सौंदर्य, वात्सल्य, त्याग, समर्पण की प्रतिमूर्ति माना गया है। प्रत्येक युग के उत्थान और निर्माण में नारी के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। वेदों में भी स्त्री को विशेष सम्मान की प्राप्ति है, उसे श्रेष्ठ शील, सोम पृष्ठा, पूजनीय कहा गया है। इतिहास की मानें तो महिलाओं का पतन स्मृतियों (मनु स्मृति) के साथ शुरू हुआ। धर्म और समाज के निर्दय कानून ने नारी को पुरुष से नीचा और निम्न घोषित कर उसे उपभोग की वस्तु बनाकर रख दिया। वैदिक युग की नारी धीरे-धीरे अपने देवीय पद से नीचे खिसकर मध्यकाल के सामन्तवादी युग में दुर्बल होकर शोषण का शिकार होने लगी।

भारत में इस्लामी और ईसाई आगमन से महिलाओं से उनके हक़ छिनते चले गए। महिलाएँ सामाजिक बेड़ियों में बंधकर रहने लगीं जिनमें प्रमुख थी सती प्रथा, बाल–विवाह, बालश्रम, विधवाओं का पुनर्विवाह पर रोक आदि| आज इस दौर में भी स्त्री के भाग्य और स्थान में विशेष परिवर्तन दृष्टव्य नहीं होते। लगभग हर धर्म में स्त्री को बांधने की कोशिश की है, कभी किसी के द्वारा रक्षण प्राप्ति के लिए, तो कभी जानवर कह दिया गया, कभी कामुक भावना से युक्त तो कभी उसकी स्वंत्रता पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया गया। समाज, देश और धर्म के नारी को अनुपयोगी बनाया गया ताकि वह अपने जीवन यापन, इज्जत और आत्मरक्षा के लिए पूर्णत: पुरुष पर निर्भर हो जाए। इन धर्मग्रंथों में अपनी इतनी बुरी स्थिति पाते हुए भी महिलाएँ अभी तक क्यों धर्म के भंवर में फंसी हुई हैं? यह सवाल बार-बार ज़हन को मथता है। अगर इस भंवर से औरतें निकलना चाहती हैं तो क्या सब से पहले ख़ुद को अबला कहना व समझना छोड़ दें और फिर अबला बनाने वाले इन पाखंडियों को अपने जीवन से बहिष्कृत कर दें|

यह चित्र नारी के जीवन के विभिन्न रंगों को दर्शाता है जहाँ एक ओर वह घूंघट की आढ में छिपी हुई है वही दूसरी और उसको प्रेम के अत्यंत सागर के रूप में दिखाया है। कही एक ओर नारी का श्रृंगार रूप दिखाया है तो वही दूसरी ओर संगीत रूपी आन्द का।

- नीलम

समाज: दिखावटी प्रवृत्ति की ओर

- मीनाक्षी उपाध्याय

जीवन में व्यक्ति दो रूपों में अपनी भूमिका निभाता है-औपचारिक तथा अनौपचारिक| इन भूमिकाओं के माध्यम से व्यक्ति किसी भी कार्य अथवा दायित्व को पूरा करता है| समकालीन समय में हमारा भारत विकसित होता जा रहा है| वैश्वीकरण के युग में संस्कृति का आदान-प्रदान किस प्रकार हो रहा है, इससे हम भली भांति परिचित हैं| आज व्यक्ति आधुनिकता को अपना रहा है और यह उचित भी है क्योंकि विकास के लिए परिवर्तन अति आवश्यक है| लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो व्यक्ति में स्वयं को आधुनिक एवं प्रभावी दिखाने की प्रवृति इतनी विकसित हो गई है कि उसकी प्रसन्नता का निर्धारण भी इसी प्रवृत्ति पर आधारित हो गया है|

दिखावटी प्रवृत्ति आज प्रत्येक क्षेत्र में विद्यमान है, चाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक| यदि मानव (समाज की सबसे छोटी इकाई) की ओर ध्यान आकर्षित करें तो इसमें प्रमुख रूप से सोशल मीडिया के द्वारा इस प्रवृत्ति की आकांक्षा को पूर्ण करने की कोशिश की जाती है| हम कोई भी कार्य करते हैं अर्थात किसी भी स्थान पर जाते हैं, उसे पलक झपकते ही सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं| इसका उदाहरण पारदर्शी रूप से कहीं भी देखा जा सकता है| जैसे कि कोविड-19 के कारण मजदूरों व मध्यम वर्ग को बहुत समस्या हुई, काफी लोगों ने खाद्य सामग्री देकर उनकी मदद भी की लेकिन संदेह इस बात का है कि वास्तविकता में उनका लक्ष्य मदद करना था या फिर समाज में दूसरों अर्थात अक्षम व्यक्तियों को तुच्छ व असहाय दिखाकर अपनी महानता का प्रदर्शन करना? निजी जीवन में भी हम कहीं भी जाते हैं (मॉल, होटल, सार्वजनिक स्थल) तो वहाँ इतनी तस्वीरें ले लेते हैं कि वास्तविक रूप में स्मृतियां हमारे नेत्र व दिमाग में नहीं बल्कि हमारे फ़ोन द्वारा ली गई तस्वीरों तक ही सीमित रह जाती हैं| इसका एकमात्र तो नहीं लेकिन प्रमुख कारण अन्य व्यक्तियों के समक्ष स्वयं को प्रदर्शित करना ही होता है|

परिणामस्वरूप यही प्रवृत्ति अन्य व्यक्तियों के अंतर्मन में उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार व्यक्ति में होड़-भावना का सृजन होता है, जो ईर्ष्या भावना को जन्म देती है। कई बार यही होड़ इतनी बढ़ जाती है कि व्यक्ति इसे पूरा करते-करते अपनी मूलभूत जरूरतों से भी हाथ धो बैठता है| लोगों में दिखावटी प्रवृत्ति जितनी बढ़ती है उतनी ही उनकी भावनाओं की निर्भरता अर्थात दुख-सुख दूसरे व अन्य व्यक्तियों पर निर्भर होने लगते हैं|

राजनीतिक क्षेत्र में यदि देखा जाए तो नेताओं में भी यह प्रवृत्ति प्रमुख रूप से देखी जा सकती है| छोटे से छोटे कार्य का प्रदर्शन भी प्रभावी रूप से किया जाता है| इसका एकमात्र कारण जनता को बहलाना तथा आकर्षित करना होता है|

अंतर्मन में शांति व सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए यह बहुत आवश्यक है कि हम दिखावटी प्रवृत्ति को अपने अंतर्मन से बहिष्कृत करें तथा वास्तविकता के आवेश में संलिप्त हो जाए| समाज के लिए हम तब तक योगदान नहीं दे सकते जब तक हम वास्तविक रूप से योगदान नहीं देंगे|

अनकही दास्ताँ

- खुशबू

रात के करीब सात बज रहे थे घर में टीवी चल रहा था; बहुत जोर शोर से समाचार वाले कह रहे थे- "घर में रहें स्वस्थ रहें सुरक्षित रहें, बाहर कोरोना का खतरा है। बार-बार हाथ धोए, सैनिटाइज़र और मास्क का इस्तेमाल करें।" अब समझ नहीं आ रहा था कि इनका खर्चा अलग से उठाएं या फिर साबुन का ही इस्तेमाल करें लेकिन काफी मज़ेदार लग रहा था तब ये सब। लेकिन अभी सरकार ने छुट्टी का ऐलान नहीं किया था। दिमाग़ में एक ही बात चल रही थी कि क्या फैक्टरी (स्याही छपाई की) का मालिक छुट्टी देगा? अगर हम नहीं गए, मालिक तो पैसे काट लेंगे फिर घर का खर्च कैसे चलेगा? बिटिया के स्कूल की फीस कैसे देंगे? एक बार ख़्याल आया कि ये बीमारी नहीं है बस लोगों ने अफवाह फैलाई है और स्वास्थ्य सुरक्षा गरीबों के लिए नहीं होती; हमें तो काम करना ही है आखिर मजदूर जो ठहरे बैंक खाता में भी कुल मिलाकर दो सौ छत्तीस रुपए ही पड़े हैं वह तो दो दिन में खत्म हो जाएंगे। (टीवी पर चैनल बदलते हुए)

चाइना जैसे कई देशों में कुछ लॉकडाउन जैसा घोषित किया गया है। हे भगवान! बस भारत में ऐसा कुछ न हो कहाँ जायेंगे क्या खाएंगे। (लंबी सांस भरते हुए)
इन्हीं सब ख्यालों के साथ रात बीत गई और अगले दिन फिर हर रोज की तरह फैक्टरी गए, सब कुछ हर रोज़ की तरह ही था| फिर दिमाग में आया कि यहाँ तो कोई बीमारी है नहीं तो फिर कैसा लॉकडाउन और कैसी देश बंदी? (सुकून की सांस के साथ)

आज वह दिन था जब प्रधानमंत्री जी ने कहा था एक दिन का जनता-कर्फ्यू होगा। सबको घर में रहना है, मन में बड़ा उत्साह था कि हम पूरे दिन घर में रहेंगे; देश के साथ खड़े रहेंगे और प्रधानमंत्री जी के आदेश का पालन करेंगे, शाम पाँच बजे थाली भी बजाई। आखिर नुकसान भी नहीं होता रविवार जो था| अब हम ठहरे अनपढ़, हमें लगा कि इसके बाद तो बीमारी का खतरा कम हो ही जाएगा। वे दिन तो बड़े सुकून और शांति के साथ दिन बीता, मन में एक आस थी कि कल फिर से फैक्टरी जाना है।
फिर से रात हुई और टीवी चालू किया तो सुनने में आया कि अब यह कर्फ्यू 31 मार्च तक बढ़ गया है| इस वक़्त तक अपने जीवन में भारत में लॉकडाउन जैसा कुछ नहीं सुना था तो एक आस थी कि शायद भारत में यह न हो| मन में वैसे डर भी था| काफी सारे सवाल थे कि अब क्या और कैसे होगा? अगर यह हो गया तो?

फिर सुबह हुई और हम रोज़ की तरह फैक्टरी गए, कानों में बार-बार एक ही तारीख 31 मार्च गूँज रही थी और मन में एक अजीब-सा डर और हलचल थी। मेरी छोटी-सी बेटी और बीवी जो गर्भवती थी, उन दोनों के चेहरे बार-बार आँखों के सामने आ रहे थे। फैक्टरी पहुँचा तो एक अलग सा सन्नाटा था, कोई भी नहीं था। फिर एक-दो दोस्तों को फ़ोन किया तो पता चला कि सच में 31 मार्च तक फैक्टरी बंद हो गई है। मैं एकदम दहल-सा गया कि अब क्या होगा और कैसे होगा? किसी तरह हिम्मत जुटाई और घर वापस लौटा| घर लौटा तो बीवी ने हिम्मत बांधी "कुछ पैसे हैं मेरे पास उससे घर चलाएँगे"|

तब तक लगा कि ठीक है एक हफ़्ते की तो बात है निकल जाएगा खर्च, मकान मालिक भी परिस्थिति को समझेंगे और साथ देंगे| यही एक आस थी, फिर वह रात गुज़री और दिन हुआ, फिर अगला दिन हुआ, इस तरह तीन दिन बीत गए और बीवी के पास जो पैसे थे वे भी ख़त्म हो गए| अब बच्ची के खाने-पीने की और बीवी की दवाइयों का खर्चा संभालना मुश्किल हो रहा था। ऐसे में जब जीवन में कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया मैंने बड़ी हिम्मत करके एक दोस्त के पास पैसों के लिए फ़ोन किया, न जाने क्यों उस दोस्त ने इस बार मेरा फ़ोन नहीं उठाया और न ही उस फ़ोन का जवाब दिया| अगले दिन फिर फ़ोन किया, फिर भी फ़ोन नहीं उठाया| उसके बाद उधर से एक फ़ोन तो आया लेकिन इससे पहले मैं कुछ कहता उनका जवाब आया कि मेरे पास पैसे नहीं है। मन को बहुत ठेस पहुँची कि आखिर इस समय में भी कोई किसी की मदद करने के लिए कैसे मना कर सकता है। आज पहली बार मुझे एहसास हुआ कि यह कलयुग है| फिर बच्चे की भूख देखी नहीं गई तो किसी तरह हिम्मत करके मकान मालिक के पास कुछ पैसों की मदद के लिए गया| भले मानुष ने कुछ पैसों की मदद भी कर दी। किसी तरह दिन कट ही रहे थे कि फिर एक बार समाचार पर ऐलान हुआ कि अब यह लॉकडाउन 14 अप्रैल तक बढ़ गया है। प्रधानमंत्री जी अपने भाषण में कह रहे थे कि हम सबको साथ देना है और साथ में लड़ना है। लेकिन मेरी चिंता अलग थी - मैं प्रधानमंत्री के किसी भी आदेश की अवहेलना नहीं करना चाहता था लेकिन भूखे पेट तो भजन भी नहीं होता।

पैसों की मदद के लिए कई दोस्तों, कई रिश्तेदारों के पास फ़ोन किया लेकिन सब जगह एक ही जवाब मिला कि हमारे पास पैसे नहीं हैं कि हम किसी की मदद करें। फिर भी मन में देशभक्ति का भाव था कि दो दिन तक भूखे पेट रहे लेकिन इस लॉकडाउन का पालन किया। लेकिन फिर अपने बच्चे को भूख से रोता देख और बुखार में तड़पता देख, आत्मा ने कोसा फिर मैं घर से निकल पड़ा कि जाकर राशन की दुकान से उधार ही सही कुछ तो ले आऊँ लेकिन बाहर पुलिस खड़ी थी जिसने बिना कारण सुने ही लाठी चार्ज कर दिया और मैं अधमरी हालत में घर वापस लौट आया। मुझे इस हालत में देख बीवी इतना रोई कि उसकी तबीयत भी खराब होने लगी।

फिर सुनने में आया कि राशन कार्ड पर मुफ्त राशन मिलेगा| सुनने में आया कि कोई अस्थायी राशन कार्ड नाम की चीज है लेकिन सरकार ने यह घोषणा करने से पहले एक बार नहीं सोचा कि आखिर यह आवेदन हम जैसे गरीब भरेंगे कैसे? आसपास के लोग जिनके पास बड़ा मोबाइल (स्मार्टफ़ोन) था उनके पास गया लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ। पचास लोगों के पीछे लाइन में लगकर पास वाले स्कूल से दो रोटी और थोड़ी सी सब्जी घर लाया। फिर दो दिन इसी तरह चला पचास-पचास लोगों के पीछे लगकर दो रोटी, कभी खिचड़ी घर ले जाने लगा और हमारा पेट भरने लगा। लेकिन ऐसे कब तक चलता! अब मन में कई सारे सवाल थे| मैं हिम्मत हार चुका था और बिना दवाइयों के बीवी की हालत भी खराब होने लगी थी।

फिर देखा कि मेरे घर से आगे वाले दो घरों से एक परिवार अपने गाँव के लिए पैदल ही चल पड़ा था| मन में सोचा कि सुरक्षित नहीं था फिर दूसरी ओर दिल ने कहा कि इसके अलावा कोई और चारा भी नहीं है। यह सोचते हुए एक दिन काट लिया। अगले दिन चिंता में बैठे ही थे कि सुबह-सुबह मकान मालिक आकर चिल्लाने लगी कि या तो किराया दो या फिर घर खाली करो। मैंने कहा कि समाचार पर कहा गया है कि मकान मालिक इस महीने किराया नहीं लेंगे लेकिन हम गरीबों की आखिर सुनता कौन है, हमारे लिए कोई नियम और कोई घोषणा मान्य नहीं होती। मेरी बीवी बहुत रोई और गिड़गिड़ाई, हाथ जोड़कर किसी तरह मकान मालिक समझें और दो दिन की मोहलत दी। इस वक़्त तक सरकार की सभी घोषणाओं और आश्वासन से विश्वास उठ चुका था और अंदर की देशभक्ति की मौत हो चुकी थी।

फिर बहुत सोचने-विचारने के बाद इस अंतिम निर्णय पर पहुँचा कि अब हमें अपने गाँव के लिए पैदल ही सही पर चलना पड़ेगा क्योंकि अब कोई और चारा नहीं है। हम बीमारी से मरे या ना मरे लेकिन भूख और गरीबी से ज़रूर मर जाते इसलिए हम पैदल निकल पड़े। कुछ ज़्यादा सामान था नहीं, हाँ लेकिन पानी जरूर मुफ्त था तो दो-चार बोतल पानी लिए हम पैदल अपने गाँव के लिए निकल पड़े। लगभग तीन दिन तक मैं, मेरी पत्नी और मेरी बेटी साथ चलते रहे चलते रहे| रास्ते पर धूप पानी सब कुछ देखा लेकिन खाने को एक निवाला न मिला न ही पीने को पानी मिला। कभी-कभी रास्ते में कुछ सामाजिक कार्यकर्ता मिल जाते थे तो एक दो गुट पानी या फिर शर्बत के मिल जाते थे, वहीं एक जीने का सहारा था इन तीन दिनों में। (आंखों में आंसुओं के साथ) दूसरा दिन खत्म ही होने वाला था कि एक मोड़ पर कुछ कार्यकर्ता दूध का कुछ बाँट रहे थे, हम सभी के खाने के लिए लाइन काफी लंबी थी लेकिन अंत में मुझे भी कुछ हिस्सा मिला जब मुँह में डाला तो पता चला कि कुछ बासी-सा है| मन को चोट पहुंची कि क्या दिन आ गए हैं लेकिन एक खाने का निवाला जाते ही मन में एक नई आस जाग उठी थी।

घर से निकले हुए आज दसवां दिन था और ये दस दिन मैं बयां नहीं कर सकता क्योंकि इस दिन तक मेरी बेटी खो चुकी थी, मैं और मेरी पत्नी दोनों शोक में डूबे हुए थे। बैठे ही थे कि अचानक मेरी बीवी की सांस चढ़ गई पर शायद यह दवाई न मिलने और भूखे रहने की वजह से थी। मैं इधर-उधर भागा लेकिन कोई मदद नहीं मिली और अंत में मेरी बीवी ने मेरी आँखों के सामने तड़पते हुए दम तोड़ दिया और मैं कुछ नहीं कर सका। मैं बैठा ही था कि अचानक एक बड़ा झुंड धक्का मारते हुए आगे आया और मुझे भर कर ट्रक में बिठा दिया गया, जाने किस शहर किस राज्य में छोड़ने के लिए। मानो मैं कोई सामान था।

गाड़ी किसी स्कूल में रुकी, रात हो चुकी थी, खाने को खिचड़ी मिली बहुत भूख लगी थी - एक निवाला मुँह में गया। मन में चल रहा था कि क्या फ़ायदा देशभक्ति का! न आज पत्नी की लाश नसीब हुई ना खोई हुई बेटी, एक बीमारी आई और मेरी ज़िंदगी तबाह कर गई। ये मेरे कुछ आखिरी विचार थे। (ये मज़दूर मर चुका था)

और इस तरह विश्व विख्यात भारतीय लोकतंत्र के किसी कोने में उसके जमीर ने भी दम तोड़ दिया। लोकतंत्र तो जनता का जनता के लिए जनता के द्वारा होता है, यही सोच कर हर साल वोट देकर बहुत गर्व से सोचता था कि अपनी सरकार, अपने लिए और अपने द्वारा चलाएगा, उस देशभक्त की मौत हो चुकी थी| भारतीय लोकतंत्र की लेट लतीफी ने एक और मौत अपने नाम कर ली थी।

यह मौत एक मजदूर की नहीं थी, यह मौत थी एक सच्चे देश भक्त की, लोकतंत्र के जमीर की, सच्ची हिम्मत और साहस की। इस मजदूर की अनकही दास्ताँ बयां कर रही है भारतीय लोकतंत्र की छुपी हुई सच्चाई, भारतीय समाज की असमानता तथा मानवता का गिरा हुआ स्वरूप। यह एक दास्ताँ चीख-चीख कर कह रही थी, कि मुस्कराइए आप कलयुग में जी रहे हैं, जी हाँ आप घोर कलयुग में जी रहे हैं, जी घबराइए नहीं आप विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में जी रहे हैं, अरे हाँ! आप विश्व के सबसे बड़े संविधान वाले देश में जी रहे हैं।

यह दिल बाग़ी ही अच्छा है।

- दीपांशी गुप्ता

दिल में था फितूर
जहान को आजमाने का
आसमान का परिंदा बन
बगावत पर उतर आने का
समझ रहे हो तुम फिर इसे प्यार इश्क मोहब्बत का तराना
तो हाँ सच है, यह दास्तान है मेरे सपनों से मोहब्बत का अफसाना।

किसी ने खान-पान बोल-चाल
का औरती ढंग बताया
तो किसी ने दी नसीहत कि तुम्हारा अंदाज है ज़रा मर्दाना
एहतियात बरतो
आखिर, शर्म लिहाज़ ही तुम्हारा गहना
अब दिल ज़रा कच्चा, सोचने की आदत से मजबूर था
तो मैंने पूछ ही डाला
कि ऐसा कोई कायदा लड़कों के लिए भी है क्या, खाला ?
खाला ने जवाब में ताना कसा
यह लड़की बाग़ी हो चलेगी
इस जुनून में ना जाने क्या कर बैठेगी!

यह ताना हर बार की तानों से थोड़ा अलग था
ना बुरा लग रहा था
ना कुछ समझ आ रहा था
यह दिल एक उलझन में पड़ा
पूछने लगा
यह बाग़ी आखिर है क्या?

तेरह साल की यह बच्ची
अब्बू के पास मासूम सवाल ले कर पहुंची
कि यह बाग़ी आखिर है क्या?
अब्बू ने कहा, जो कोई बगावत या विद्रोह करें तो वो है बाग़ी।
सुन कर लगा, मानों ये दिल बाग़ी ही अच्छा है
मियाँ कम से कम गूँजने को आवाज़ उठाने का जज़्बा है।

बड़ी हुई, कॉलेज का समय आया
और जब घरवालों को पता चला कि उनकी बिटिया को करनी है वकालत
तो पूरे घर ने हाहाकार मचाया|
सबने अपने-अपने अड़ंगे लगाए
रोकने के लिए बेढंगी दाव-पेंच भी भिड़ाए,
अम्मी कहती कि ज्यों कर ली वकालत
तो घर में ही रोज खुलेगी अदालत,
भईया बोला कि तुम बहुत भावुक हो
वकालत छोड़ो फ़ैशन डिजाइनिंग कर लो,
अम्मा कहती कि ना-ना एक वकील से कोई लड़का शादी करने को राज़ी ना होगा
मेरी बेचारी बिटिया रानी का क्या होगा!
अब इतनी दलीलों के बाद, अब्बू जिन्हें अभी तक मेरे वकालत करने से कोई दिक्कत नहीं थी
वो भी बोल पड़े -- बेटी तुम डॉक्टरी क्यों नहीं कर लेती।

मन मेरा ऐसी कश्मकश पड़ा
कि अधीर अधरों से चीखा --
फैसले लेने को
ना चाहिए विसंगत सलाह
जिंदगी जीने को
ना चाहिए पति की पनाह
वकालत करने का मज़बूत है मेरा इरादा
जो अब नहीं बदलेगा।

सब खामोश, एकदम सन्नाटा
और अचानक ही बोली अम्मा
लड़की हाथ से निकल गई है
यह लड़की बाग़ी हो गई है।
अम्मा के ये लफ्ज़ सुनकर भी
दिल में मेरे तसल्ली थी
मन मेरा नूरानी
और मैं बाग़ी हो चली थी,
चूंकि बचपन की तरह इस ताने को लेकर
ना माथे पर शिकन
ना दिल में कोई उलझन
बल्कि शीशे सी साफ़ छवि थी
आखिर, यह दिल बाग़ी ही अच्छा था।

बाग़ी यह दिल
जो सामाजिक विद्रोह छेड़
पितृसत्ता से जंग लड़
कर रहा अपने हक और सपनों की माँग
या यूँ कहूँ कि बाग़ी है ये समाज
जो आज तक हमें बेड़ियों में बाँध
हकों को लाँघ
नारी के अस्तित्व से करता आया है बगावत!

खैर अब जो भी है यह दिल बाग़ी ही अच्छा है।
यह दिल बाग़ी ही अच्छा है।।

शिवानी बंसल

इस कविता को श्री अरबिंदो कॉलेज द्वारा आयोजित पाखी'20 की काव्य पाठ प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

आवाज़ : आधुनिक नारी की

- नीलम

मुझे आवाज़ उठाने दो
हाशिये से अब तो मुझे मुख्य पटल पर आने दो।
सुमित्रा हो, कैकयी हो, कौशल्या भी तुम
वृक्षों से लिपटी बेल हो
कहीं सख्त सघन देवदार हो,
हे नारी! तुम अपरंपार हो।

कन्या कहकर मुझे गर्भ में ही न मारो,
इस संसार में मुझे आने दो।
यूँ मेरी अनसुनी आवाज़ न दबाओ,
मुझे भी रंगों-सा छाने दो।
हाशिये से अब तो मुझे मुख्य पटल पर आने दो।

लड़की होना कोई अपराध तो नहीं।
फिर क्यों मुझे दहेज के संग तोला जाता रहा?
अपमानित करके क्यों सदियों से अबला बोला जाता रहा?
चंडी रूप धारण करने के और न मुझे बहाने दो।
हाशिये से अब तो मुझे मुख्य पटल पर आने दो।

आज फिर कलयुग की सीता को हरने रावण टूट चला,
फिर कोई दुर्योधन द्रौपदी का मान लूट चला।
नजरें नीची करके मैंने हमेशा बहुत जुल्म सहे,
अब तो अंगार भरी नज़रों को मिलाने दो।
हाशिये से अब तो मुझे मुख्य पटल पर आने दो।

मधुबनी कला जिसे मिथिला पेंटिंग के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय और नेपाल के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित है। परंपरागत रूप से, कला क्षेत्र में पीढ़ी दर पीढ़ी तक महिलाओं को पीड़ित किया गया है। पेंटिंग टहनियों, प्राकृतिक रंगों और पिगमेंट के साथ की गई है।

- शिवानी बंसल

मैंने चाहा कि बिना बोले समझा जाए

- अनुभूति जैन

क्या अभिव्यक्ति के लिए भाषा जरूरी है?
क्या समझने के लिए शब्द ज़रूरी है?
अगर नहीं;
तो क्यों नहीं कोई मुझे समझता
जब मैं ना चाहूँ कुछ बोलना|

बचपन से टोका मुझे, चुप रह!
पिता को प्रत्युत्तर नहीं देना, चुप रह!
भाई से लड़ना नहीं, चुप रह!
वरना पति मारेगा, चुप रह!
वरना बेटा घर से निकाल देगा, चुप रह!
जब जीवन भर चुप रखना है तो
मौन रह कर समझो मुझे!
विरोधाभास तो यह है, काल
कि एक स्त्री ही, एक स्त्री के लिए
अंधी बन जाती है।

कहते हैं...
अपने भाग्य को अपनाओ
परन्तु ये क्यों भूल जाते है कि
भाग्य रेखाएँ बदलती भी हैं
और उसकी कर्ता मैं स्वयं हूँ
क्या यह परिवर्तन इतना मुश्किल है
कि बाहर सँभालते-सँभालते
अंदर ही अंदर मर गई मैं...

महिलाएँ समाज की वास्तविक वास्तुकार होती हैं| हर चीज से बढ़कर, अपने जीवन की नायिका बनिए, शिकार नहीं|

- खुशबू

भ्रष्टाचार

- सीता प्रजापति

गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी से लाचार
देश रहा मर, जनता करे हाहाकार।
घूस, धोखा, चालबाजी का प्रचार
नेता कर रहे मौज, गरीब है बीमार।

शराफत, सिधाई, इंसानियत पर प्रहार
जेब में हो रुपया तो निकालो और काम कराओ यार।
धर्म, कथा, पूजा - है सबमें लूटमार
इधर से निकलो तो उधर पिसोगे! सलाम साहब थानेदार।

कुर्सी, पॉवर, सत्ता के चँगुल में गिरफ्तार
बलात्कार की फ़ाइल दब गई, था न्याय का इंतज़ार।
न्यायालय, कार्यपालिका सब सत्ता के गुलामगार
आम आदमी पिसता, करता व्यर्थ दया की पुकार।

नेता का बेटा, आईपीएस का लाल, हुजूर का लड़का सब हैं मालदार
खतरे में बेटी गरीब की, बस अब उठाओ हथियार।
राशन की दुकान, हलवाई का पकवान, बीमा के फ़ायदे हर जगह मारामार
पैसे लाओ, मिठाई थमाओ, रोकड़ा निकालो, नहीं तो न कोई जीवन की दरकार।

भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार, हर बार भ्रष्टाचार
खाना, दवाई, हवा, सब में मिलावट का बुखार
महामारी है फैली नहीं होगा मुफ्त इलाज
वुहान से निकाला 'फ़्री'; अब जनता के पैसे पर है वार।
जिंदा रहना है मुश्किल क्योंकि लंबी है कतार
लोग निकल कर आगे हैं बढ़ते खुद 'क्यूं' है शर्मसार।
जाने कैसे हैं ये लूटते, खसोटते करते भ्रष्टाचार
नेता जी का काला रुपया है और जनता है जेबमार।
भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार, हर बार भ्रष्टाचार।

पर्यावरण

- प्रिया

गाड़ा जब जमीन में उसको,
निकली कोमल डाली,
बढ़ते-बढ़ते बन गई,
एक लकड़ी हिम्मतवाली।

जब दी इसने लोगों को हवा,
तब आया इसको बड़ा मज़ा,
स्वच्छ हवा का है क्या करना,
लोगों ने सोचा यह तो है, उधार का झरना।

इतने संघर्ष करने के बाद,
दिखाई जिसने अपनी ईमानदारी,
पर क्या मिला इसको अंत में,
लोगों की बेवफाई!

जब देखा इसने चारों तरफ,
तो पाया प्रदूषण का ढेर,
यह देख कर भी,
वह निभा रहा है अपनी ईमानदारी।

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया, बाले! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?

- नीलम

व्यवस्था का तकाजा

- शारदा यादव

गूँज उठी है किलकारी, सूने आँगन की वो प्यारी
हो चुका है शंखनाद दूर भागेगी समाज की वो बीमारी
नेताओं ने सांत्वना दे दी पर हो न पाई सहायता
अध्यात्म का गुणगान है तभी तो भारत विचारता
समाज की धारा बदली, फैल गई है महाव्यथा
धरती के हुक्मराने बदले, बदल गई है व्यवस्था।

जिस भारत-वर्ष में वीरों का सम्मान है
उस भारत-वर्ष में नारी भी भगवान है
पर कोई सोचे समझे तभी तो बदले व्यवस्था
धरती के हुक्मराने बदले, बदल गई है व्यवस्था।

जो वतन को लूटे खाए, वह तो बेहद भ्रष्टाचारी है
जो समाज को न्याय ना दिला सके, वह न्याय ही क्या बेचारी है?
नेता, पंडित मिटा बैठे सच्चाई को, लालसा की उन पर छाई वो खुमारी है|
ऊपर तक है उनकी चलती तभी तो पाते सुविधा
धरती के हुक्मराने बदले, बदल गई है व्यवस्था।

जुर्म के अन्यायी को ना मिलती है सजा की बंदिशें
कितने ही नव किसलयों की बेकार जाती तमाम कोशिशें
व्यवस्था में है गड़बड़ी या न्याय की है दुविधा?
धरती के हुक्मराने बदले, बदल गई है व्यवस्था।

संस्कारों की नींव बताकर कर बैठे हैं मूर्खता
समाज की दशा बदल दी फिर भी ना प्राणी सोचता
परिदृश्य का आंकड़ा देखो, इससे भी कहीं अधिक
प्यारी थी वो नगरी किष्किंधा
धरती के हुक्मराने बदले, बदल गई है व्यवस्था।

कुछ लोग तरसते हैं रोटी के टुकड़े-टुकड़े को
फिर भी कहते हैं भारत आजाद है
वे मांगते अगर सहायता तो क्या ये नाजायज फरियाद है?
जाहिर हो न पाती चिंता की लकीरें यही तो है बड़ी व्यथा
धरती के हुक्मराने बदले, बदल गई है व्यवस्था।

निचला तबका उठ ना पाया, अमीरों की बढ़ रही ख्वाहिशें
गरीबी की अंगड़ाई में कहाँ खिल पाई है गुलशनें
बंदिशों की बेड़ियों में जकड़ी हुई है व्यवस्था
धरती के हुक्मराने बदले, बदल गई है व्यवस्था।।

कोरोना और निजता

- छाया

जिन झूलों पर चढ़ने के लिए बच्चे एक-दूसरे से होड़ करते थे, वहाँ खामोशी बैठी है। इतनी शांति है कि धीमी आवाज भी तेज लगती हैं। कहते हैं कि महामारियां बहुत कुछ बदल देती हैं। कोविड-19 की महामारी क्या-क्या बदलेगी, अभी ठीक से नहीं कहा जा सकता, लेकिन इस बीच एक चीज तो निश्चित तौर पर देखी जा सकती है कि कोरोनावायरस के संक्रमण ने नागरिक अधिकारों की बहस को बदल दिया है। निजता के अधिकार का उल्लंघन बड़े पैमाने पर या तो हो रहा है या उसकी कोशिशें और तैयारियाँ चल रही हैं, मगर निजता के अधिकार की तरफदारी करने वाले फिलहाल चुप हैं। यह वे भी समझते हैं कि यह समय मानवता को बचाने का है, अगर मानव ही नहीं रहेंगे तो अधिकारों को लेकर क्या होगा, इसलिए मानव अधिकारों की बात तो बाद में भी की जा सकती है। खासकर जिस तरह से चीन ने कोरोना संक्रमण पर तेजी से नियंत्रण पाया, उसने सबकी प्राथमिकता बदल दी है। चीन ने सभी संक्रमित और आशंकित लोगों के मोबाइल फ़ोन पर डिजिटल कोड भेजकर उनकी निगरानी शुरू कर दी। ऐसे लोग अगर क्वारंटाइन वाली जगह से बाहर निकले, तो उनकी खबर सरकारी तंत्र को मिल जाती है। इसमें चीन को सफलता भी मिली है, यही तरीका इजराइल ने अपनाया है और ताईवान ने इसमें एक नई चीज यह जोड़ दी है कि उसने ऐसे हर रोगी या आशंकित लोगों के लिए एक लक्ष्मण-रेखा बना दी, जैसे ही वे उस लक्ष्मण-रेखा के दायरे से बाहर जायेंगे, पुलिस और प्रशासन को खबर हो जाएगी। दक्षिण कोरिया तो इन सब से भी आगे बढ़ गया। उसने ऐसे सभी लोगों का लोकेशन डाटा ऑनलाइन कर दिया, जिसे कोई भी देख सकता है, यानी कोरोनावायरस से संक्रमित या इसकी आशंका वाले लोग किस समय कहाँ है, इसे पूरी दुनिया में कोई भी जान सकता है। जीपीएस के सहारे स्मार्टफ़ोन का लोकेशन पता लगाना कठिन काम नहीं है और अगर इससे संक्रमण रोकने में कुछ मदद मिल रही हो, तो विरोध भला कौन करेगा?

लेकिन हर जगह यह इतना आसान भी नहीं है। यूरोप के ज्यादातर देशों में ऐसे कानून हैं, जो सरकारों और कंपनियों को लोगों के मोबाइल फ़ोन की निजी जानकारी जमा करने से रोकते हैं और बाद में यूरोप के यही देश कोरोनावायरस संक्रमण के सबसे बड़े शिकार बने। अमेरिका में भी इस तरह से लोगों का ब्योरा जमा करने की व्यवस्था नहीं है, इसलिए वहाँ भी यह काम नहीं हो सका। अब कुछ स्टार्टअप शुरू हुए हैं, जो ऐसे लोगों को (जो संक्रमित या आशंकित हैं) अनाम बनाए रखते हुए उनकी निगरानी के इंतजाम की कोशिश कर रहे हैं| कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए सिर्फ मोबाइल फ़ोन का ही सहारा नहीं लिया जा रहा, बल्कि कुछ दूसरी तरह की तकनीकें भी आजमाई जा रही हैं, जैसे ड्रोन से शहरों की निगरानी। ड्रोन में लगे कैमरे से यह देखा जा रहा है कि कहाँ किस जगह सामाजिक दूरी के नियम का पालन नहीं हो रहा या कहाँ लोग भीड़ लगाए हुए हैं। भारत भी इस तरह के कदम उठा रहा है, जिससे सामाजिक दूरी बनी रहे और संक्रमण को फैलने से रोका जा सके। निजता की बात करने वाले ऐसे निगरानी का भी हमेशा से विरोध करते रहे हैं।

महामारी एक भीषण विपदा होती है। ऐसी विपदा के समय कई तरह के विमर्शों और आपत्तियों को विराम दे दिया जाता है। कोशिश यह रहती है कि पहले हम विपदा से मुक्त हों और फिर अधिकारों के बारे में

सोचें। लेकिन एक बार विपदा आ जाने का अर्थ यह नहीं है कि निजता का प्रश्न/तर्क हमेशा के लिए निरर्थक हो गया। निजता और नागरिक अधिकार को 'आधुनिक दुनिया के खुले समाज की नींव' माना जाता है। लोगों ने लंबे संघर्षों के बाद इन्हें हासिल किया है। बेशक कोरोना संक्रमण ने इनकी जरूरत और सुरक्षा के एक नए आयाम की ओर हमारा ध्यान खींचा है, जिसका विमर्श विपदा बीत जाने पर ही शुरू होगा परंतु जो देश अपने नागरिकों के निजता का प्रयोग महामारी से बचने के लिए कर रहे हैं उन्हें इसकी सुरक्षा का भरोसा भी अपने नागरिकों को देना होगा।

पोस्ट कार्ड - कोरोना के लिए

- मितिक्षा गुप्ता

आशा है कि तुम कुशल मंगल होंगे और जहाँ भी होंगे तबाही का कारण बन रहे होंगे। मानव को धीरे-धीरे विलुप्त करते हुए तुम अपना काम अच्छे से कर रहे हो, पर तुम्हें यह जानकार बहुत दुख होगा कि आज तुम्हारे कारण हम इंसान अपने समाज को बदलते जा रहे हैं। आज तुम्हारे कारण ही लोग धर्म, संप्रदाय और जात-पात को छोड़कर इंसानियत की बातें कर रहे हैं। भाग-दौड़ भरी जिंदगी को छोड़कर मेडिटेशन की ओर जा रहे हैं। घर के काम को कम समझने वाले लोग आज खाना बना रहे हैं, साफ-सफाई कर रहे हैं। और तो और तुम्हारी वजह से आज युवा टीवी पर रोडीज़ या स्प्लिट्सविला देखने के बजाय रामायण और महाभारत देख रहे हैं।

तुमने हम सब के अंदर डर तो बना दिया है पर तुमने हमें जीने का नया तरीका भी दिया है। हमें सिखा दिया है कि मॉल, सिनेमा घर और पब्स हमारी जरूरतें नहीं हैं। पिज़्ज़ा और मोमोज़ से ज़्यादा स्वादिष्ट माँ के हाथ का खाना होता है और असली हीरो स्पाईडर मैन या आयरन मैन नहीं बल्कि डॉक्टर, पुलिस कर्मी और प्रशासन होते हैं।

इन सभी बदलाव का प्रतिशोध हम तुमसे लेकर रहेंगे। इस आशा के साथ कि तुम आने वाले दिनों में हमें हमारी आज़ादी बख्शोगे।

तुम्हारा (मजबूरी में ही सही) अनुज

इंसान

बदलता समय

- संजीवनी खन्ना

आज जिस 21वीं सदी के दौर से हम सभी गुजर रहे हैं उसमें कहीं ना कहीं एक दूसरे की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण हो चुकी है। जब हम किसी के जीवन काल की बात करते है और उसमें विद्यार्थी जीवन काल का जिक्र ना करें तो यह अनुचित-सा मालूम पड़ता है। विद्यार्थी काल में एक से बढ़ कर एक शिक्षकों का जिक्र होना भी लाजमी है, जो कहीं ना कहीं हमारे जीवन को और बेहतर बनाने में हमेशा प्रयासरत रहते हैं। हम सभी की जिंदगी में कई ऐसे शिक्षक होंगे जिन्हें हम आखरी सांस तक नहीं भूल सकते, जिन्होंने हमारे जीवन को एक नई दिशा और एक नया नजरिया प्रदान किया है। जब शिक्षकों की बात होती है तो हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हमारे समाज में शिक्षकों को एक अलग स्थान प्रदान किया गया है जो की भगवान से पहले है। यह शिक्षक और विद्यार्थी का पवित्र रिश्ता भेद-भाव, हित-अहित, लालच, अहंकार जैसी अनैतिक भावना से बहुत ऊपर है। परंतु जैसे-जैसे समय बदल रहा है हर चीज़ में बदलाव तो लाजमी है, चाहे वो माँ-बच्चे का रिश्ता हो या शिक्षक-विद्यार्थी का या फिर भाई-भाई का रिश्ता हो। माना कि आज समय की माँग बदलाव ही है और अगर इसके साथ-साथ आप नहीं चले तो कहीं ना कहीं आप समाज में बहुत पीछे रह जाएँगे परंतु एक प्रश्न मेरे मन में आता है कि ऐसा भी क्या बदलाव या तरक्की कि आपके मौलिक रिश्तों की नींव को ही हिला दे या खत्म कर दे।

हाँ, यह तो सही है कि आज के समय में ना हमारे अंदर उतनी मौलिकता बाकी है और न ही आपके। परंतु जब आप एक शिक्षक होते हैं तो आप के पास बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है, जो किसी भी विद्यार्थी के दिमाग को किसी भी ओर मोड़ सकती है, फिर चाहे वो सकारात्मक हो या फिर नकारात्मक अर्थात सरल शब्दों में बोले तो राष्ट्र निर्माण हेतु हो या ना हो। पता नहीं मेरा यह लिखना सकारात्मक माना जाएगा या नकारात्मक परंतु मेरे लिए यह लिखना जरूरी था। संभवतः बहुत लोगों का नजरिया व विचार मेरे से नहीं मिलते होंगे, वे मेरी बातों से असहमत होंगे और होना भी चाहिए क्योंकि असहमत होना ही एकमात्र जरिया है, जो बताता है कि हम सांस लेते जानवर नहीं बल्कि एक सोचने और समझने की शक्ति रखने वाले इंसान हैं। यह सोच कर ही मेरी रूह कांप उठती है कि कोई इंसान आए और असहमत होने के अधिकार को ही छीन ले या फिर यूँ कहे कि अपने अहंकार, अपने आप को सर्वोत्तम साबित करने के लिए किसी भी हद तक चला जाए। समस्या ना तो किसी व्यक्ति से है ना हीं किसी के खुद को सर्वोत्तम साबित करने से है, समस्या तब उत्पन्न होती है जब एक शिक्षक जिसका कार्य होता है नि:स्वार्थ भाव से राष्ट्र निर्माण करना लेकिन वास्तव में वह अपने झूठे अहंकार के कारण कुछ छात्रों को मिलने वाले अधिकारों और संसाधनों जैसे स्कोलरशिप आदि को नष्ट करने का प्रयास करता है। परन्तु अपने झूठे और ढकोसले भरे सिद्धांतों के आड़ में छुपा यह शिक्षक यह भूल जाता है कि कहीं न कहीं वह पूरे शिक्षक समुदाय के चरित्र को धूमिल करने का प्रयास कर रहा है। और रही बात उस छात्र की तो अगर उसके भीतर काबिलियत होगी तो वह अपने हक को छीन ही लेगा परन्तु फिर वह कभी शिक्षक, जिसे ईश्वर से ऊपर स्थान दिया गया था, उस पर विश्वास नहीं कर पाएगा और अगर ऐसा कुछ होता है तो इसमें उस छात्र की कोई गलती नहीं होगी।

#डी. यू. भ्रष्टाचार

भारतीयों का राष्ट्रवाद व चीनी अनुप्रयोग

- मिहिका भौमिक, बी.ए. ऑनर्स अर्थशास्त्र (तृतीय वर्ष)

द्विपक्षीय व्यापार:-

भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि होती जा रही है। आर्थिक क्षेत्र की दृष्टि से, चीन में भारत का **निर्यात** मुख्य तौर से प्राइमरी उत्पादों पर आधारित है। भारत चीन से इलेक्ट्रिकल मशीनरी एवम् पदार्थ, जैविक रसायन, सिल्क, फ्यूल, इत्यादि आयात करता है। **भारत को व्यापार घाटे का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि भारत निर्यात से अधिक आयात करता है।**

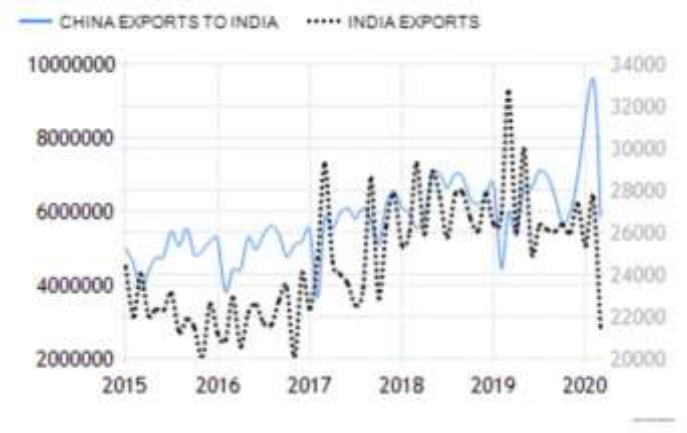

स्रोत: ट्रेडिंग इकोनॉमिक्स

हमारी चीन पर निर्भरता बढ़ती जा रही है, चाहे वह अनुप्रयोग (**ऐप्स**) हों या विभिन्न उत्पाद या फिर **निवेश** के तौर पर। चीन ने भारत की अर्थव्यवस्था को काफ़ी प्रभावित किया है। हम बाज़ार से जो भी सामान खरीदते हैं, उसमें बहुत **बड़ी हिस्सेदारी** चीन की है। इसे कुछ **उदाहरणों** की मदद से समझाया गया है:

- भारत में सस्ते दामों में बेचे जाने वाले अधिकतर **मोबाइल फोन्स** चीन के हैं।
- 22% मार्केट शेयर के साथ चीन का **यू सी ब्राउज़र** भारत का नम्बर दो इंटरनेट ब्राउज़र बन चुका है।
- **फ़ैक्टर डेली** नाम की एक कम्पनी के रिसर्च के मुताबिक़, भारत में इस्तेमाल होने वाले टॉप 100% मोबाइल ऐप्स में से, **44%** चीन के हैं।
- **पब्जी** एक चीन कम्पनी टेंसेंट द्वारा संचालित है। यह खेल खेलने वालों की **भारत में संख्या 5 करोड़ से भी ज़्यादा है। टिक-टॉक** जैसे ऐप्स भारत में काफ़ी लोकप्रिय हैं। इस ऐप के भारत में 31% (**46 करोड़)** यूज़र्स हैं। भारत में टिक-टॉक के यूज़र्स की संख्या इंस्टाग्राम से भी ज़्यादा है।
- **ज़ूम, शेयर इट, हेलो,** जैसे ऐप्स का इस्तेमाल भी बहुत बड़े पैमाने में हो रहा है।
  हाल ही में, उपयोगकर्ताओं की **प्राइवेसी का उल्लंघन** करते हुए **ज़ूम** के ख़िलाफ़ कई शिकायतें उठाई गईं थीं। उपयोगकर्ताओं के खाते बेचे जा रहे थे।

इसके अलावा, चीन की हिस्सेदारी विभिन्न देशों के ऐप्स में भी है।

चीन, जहाँ अत्यधिक विदेशी ऐप्स को इस्तेमाल करना प्रतिबंधित है, विभिन्न देशों में अपने व्यापार को अविश्वसनीय रूप से बढ़ा रहा है। यह एक प्रमुख चिंता का विषय है।

कोरोनावायरस के सन्दर्भ में:-
जैसा कि हम सब जानते है **कोरोनावायरस** की उत्पत्ति चीन से हुई थी लेकिन हमें इसकी जानकारी काफ़ी बाद में मिली थी। अगर चीन चाहता तो पहले ही हम सबको सतर्क कर सकता था। इसके अलावा चीन ने कई देशों को डिफेक्टिव टेस्टिंग किट्स भी भेजे। चिंता की बात तो यह है कि **विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चीन की ग़लतियों पर पर्दा डाला**। शुरुआती दौर में ही अगर यात्रा पर प्रतिबन्ध लगाया जाता तो मामला इतना गंभीर नहीं होता।

ऐसा माना जाता है कि चीन आर्थिक रूप से कमज़ोर कंपनियों में निवेश करना चाहता है और इनकी हिस्सेदारी ख़रीदकर मौके का फायदा उठाते हुए भारत को गुलाम बनाना चाहता है। इस सम्बंध में **भारत ने ऑपर्टूनिस्ट टेकओवेर्स को रोकने के लिए, पड़ोसी देशों के ऑटोमैटिक एफडीआई के रास्ते को बन्द किया। भारत के इस फैसले पर चीन ने आपत्ति जताई। स्पेन, इटली, जापान और ऑस्ट्रेलिया** भी चीन को रोकने के लिए एफडीआई के नियमों में ऐसे बदलाव कर चुके हैं।

अन्य चुनौतियाँ:-
वैसे तो हम सब देशभक्त होने की काफ़ी चर्चा करते है और अगर चीन के ख़िलाफ़ कोई आलोचना की जाती है, हम उसमें भी शामिल होते हैं। **लेकिन जब ज़ूम, टिक-टॉक, पब्जी, अलिबाबा, ब्यूटी प्लस, एयरब्रश, क्लब फैक्ट्री, इत्यादि को अनइंस्टॉल करने की बात आती है, तो सब पीछे हट जाते हैं।** यह **सूडो नैशनलिज़म** को दर्शाता है। हम इनसे इतने प्रभावित हो गए हैं कि यह नज़रंदाज़ कर देते है कि चीन इन स्रोतों के ज़रिए हमें **ट्रैक** करता आ रहा है। औपचारिक रूप से सरकारी मार्गों के माध्यम से इनका बहिष्कार करना असम्भव है। परंतु **चीनी ऐप्स अनइंस्टॉल** करना **हमारा व्यक्तिगत निर्णय** है, जो हम ले सकते है और बाजार में उपलब्ध इनके अन्य विकल्पों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

इन ऐप्स के ज़रिए चीन बहुत कमाता है। 2017 में जब कई भारतीयों ने स्नैपचैट अनइंस्टॉल किया था तब चीन को बहुत नुक़सान उठाना पड़ा था। उसी प्रकार, चीनी ऐप्स को अनइंस्टॉल कर, हम ना सिर्फ चाइना के राजस्व स्रोत को रोक सकते हैं, बल्कि हमारी **निजी डाटा को भी बचा सकते हैं। इस तरह कुछ हद तक हम इन ऐप्स के ज़रिए उत्पन्न होने वाले राजस्व और चीन की जासूसी को रोक सकते हैं।**

समीक्षा में सदस्यों का अनुभव

सीता प्रजापति

समीक्षा गार्गी कॉलेज की वह वाद-विवाद समिति है, जो विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए एक बहुआयामी स्तर प्रदान करती है| आत्मविश्वास के साथ अपनी बात को रखना मुझे वाद-विवाद से सीखने को मिला| समीक्षा के साथ मेरी अनेक यादें हैं जो सुंदर और अनमोल हैं। समीक्षा वाद-विवाद समिति न सिर्फ एक समिति है , जहाँ हम बहुत कुछ सीखते हैं बल्कि एक परिवार है; जहाँ हम सभी मिलजुल कर रहते हैं। अगर मैं इस परिवार के अनुभव कलम से लिखूँ तो बहुत ही कठिन होगा क्योंकि अनुभव इतने हैं कि शायद हजारों किताबें उन अनुभवों को लिखते-लिखते ही भर जाए। फ़िर भी गागर में सागर भरने जैसी एक छोटी सी कोशिश मैंने की है। मैं मध्य प्रदेश से जब अनेक सपने लेकर दिल्ली आई तो कॉलेज में कई सोसायटियों के बारे में पता चला। तब मैंने हिंदी वाद-विवाद समिति का हिस्सा बनने का निर्णय लिया। सोसाइटी का हिस्सा बनने के लिए हमें त्रिस्तरीय-ऑडिशन से गुजरना था। मैं बहुत ज़्यादा डरी हुई थी कि मैं ऑडिशन कैसे दे पाऊंगी? तब दीपांशी दीदी ने सभी को बहुत प्यार से समझाया और हमारे अंदर आत्मविश्वास जगाया कि हम बिना डरे अपनी बात रख सकते हैं। तब मेरा सारा डर जैसे गायब हो गया और मैंने सारे ऑडिशन बिना डरे दिए, इसके अलावा बाद में मैंने जितनी भी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लिया, वहाँ भी मुझे अपने आत्मविश्वास में किसी प्रकार की कमी नहीं दिखी। सोसाइटी के अन्य सदस्यों से मुलाकात ओरियंटेशन के दौरान हुई। मैं बहुत ही इंट्रोवर्ट लड़की थी, लेकिन सोसाइटी में सभी लोगों का व्यवहार इतना अच्छा था और मुझे बोलने का इतना मौका दिया गया कि मैं खुलकर अपने विचार सबके सामने रख पाती थी और कब मैं इंट्रोवर्ट से एम्बीवर्ट बन गई मुझे खुद ही पता नहीं चला। मैं अपने घर से बहुत दूर थी जहाँ अपना तो कोई नहीं था लेकिन सोसाइटी में मुझे इतना अपनत्व मिला कि मैं अपने घर से दूर होकर भी परिवार में थी और हूँ|

वह पल मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगा, जब मैं पहली बार दूसरे कॉलेज की वाद विवाद-प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए गई थी| उसके बाद वाद-विवाद प्रतियोगिता का यह सिलसिला शुरू हो गया और मेरा नई-नई चीजों को सीखने का लक्ष्य भी साध्य होने लगा| चूंकि मैं विज्ञान की छात्रा हूँ तो वाद-विवाद जैसी बहुआयामी प्रतियोगिता के लिए अन्य विषयों की जानकारी भी मुझे सोसाइटी के अभ्यास-सत्र से मिली और मेरे ज्ञानार्जन में भी सहायक रही| वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में निरंतर भाग लेते रहने के कारण मैने जिंदगी की अनेक चुनौतियों का सामना करना सीखा। 'समीक्षा' ने मुझे अपनी कमियों पर कार्य करने का मौका दिया और उन कमियों पर कैसे सफलता प्राप्त करनी है, इसका अनुभव भी दिया।

अंत में बस इतना अंकित करना चाहूंगी कि समीक्षा का प्रत्येक सदस्य मेरे दिल के बेहद करीब है| सभी के साथ अनेक यादें हैं, मैं समीक्षा का तहे दिल से शुक्रिया करना चाहूंगी, न सिर्फ अपने परिवार का सदस्य बनाने के लिए बल्कि एक जिम्मेदार इंसान बनाने के लिए।

दीपांशी गुप्ता

स्कूल के दिनों से ही वाद-विवाद में रुचि थी तो कॉलेज आते ही पहले दिन हिंदी वाद-विवाद समिति के ऑडिशन के लिए पंजीकरण करवाया, ऑडिशन दिए और सफर शुरू हो गया। तीन साल का सफर समिति में बेहद ही यादगार और दिलचस्प था। पहले वर्ष से ही समीक्षा मेरे कॉलेज की ज़िंदगी का एक अभिन्न अंग बन गया। समीक्षा को हमेशा अपना परिवार माना और कॉलेज की कक्षा से ज़्यादा सोसायटी प्यारी हो गई। समीक्षा ने मेरे गार्गी के सफर को बेहद खूबसूरत बना दिया। समीक्षा ने तीन सालों में बहुत कुछ सिखाया, मेरे वक्तृत्व कौशल को उभारा और मेरा सर्वांगीण विकास कर मुझे एक परिपक्व इंसान बनाया। इसके लिए मैं समीक्षा परिवार (सीनियर्स, जूनियर्स, एवं अध्यापक गण) की हमेशा आभारी रहूंगी।

तीसरे वर्ष में सोसायटी की अध्यक्षा की भूमिका निभाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने अपनी तरफ से समीक्षा में वे सभी सुधार लाने की कोशिश की जो कमियां पिछले दो सालों में मेरी नजर में आयी और मैं उम्मीद करुँगी कि जो कमियां इस वर्ष रह गईं वे अगले साल मेरे जूनियर्स सुधारने का प्रयत्न अवश्य करेंगे।

समीक्षा में कुछ नया और अच्छा करने की चाह हमेशा ही मेरे दिल में रही है। इस वर्ष भी रिवायत के रूप में युवा संसद का प्रारंभ करने के लिए ज़ोर शोर से तैयारियां की लेकिन कोरोनावायरस नामक सर्वव्यापी महामारी के चलते वह कार्यक्रम स्थगित हो गया। ख़ैर कुछ चीज़े आपके बस में नहीं होती। आशा करती हूँ कि समीक्षा की पत्रिका "प्रज्ञा" का यह पहला संस्करण पाठकों को भाए और यह पहल अगले आने वाले वर्षों में भी कायम रहे। इसमें अभी के और भविष्य के जूनियर्स का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा क्यूंकि यह सेनियर्स और जूनियर्स का आपसी प्रेम और डोर ही है जो प्रयासों को सफल बनाती है।

चूंकि समीक्षा को परिवार मान चुकी हूँ तो जाने का बेहद गम रहेगा और याद भी आएगी, पर कुदरत का नियम है हर चीज़ का अंत होता है। ख़ैर ग्रेजुएट होकर भी समीक्षा से चली भले जाऊं लेकिन इस परिवार को कभी भूल नहीं पाऊंगी और अगर मुमकिन हुआ तो बाद में भी अपना पूर्ण योगदान देने के लिए तत्पर रहूँगी। आशा करती हूँ कि समीक्षा परिवार से संबंध हमेशा अटूट रहेंगे।

सभी जूनियर्स को प्यार!

छाया

हालांकि समीक्षा परिवार का मेरा सफर बहुत लंबा तो नहीं, पर जितना है, बहुत ही खास है। समीक्षा केवल एक हिंदी वाद-विवाद समिति ही नहीं है जो केवल अपने सदस्यों के वक्तृत्व कौशल को उभारती है बल्कि यह गार्गी महाविद्यालय का वह आलय है जो अपने सदस्यों के सर्वांगीण विकास पर बल देती है और उसे सुनिश्चित भी करती है। अपनी बात को बिना किसी लड़ाई-झगड़े तथा बहसबाजी के आत्मविश्वास के साथ कैसे रखना है, यह मुझे समीक्षा ने सिखाया है। बहुत कम समय में समीक्षा परिवार से मुझे बहुत अधिक प्रेम और सम्मान मिला है, उसके लिए मैं समीक्षा परिवार की हमेशा आभारी रहूँगी।

किसी भी समिति को चलाने के लिए यूनियन बहुत आवश्यक होता है और समीक्षा का यूनियन अपने आप में बेहतरीन है जो हर परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहता है। वर्तमान यूनियन की अध्यक्षा दीपांशी तथा उपाध्यक्षा खुशबू ने समीक्षा को एक नयी ऊँचाई प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत की है। साथ ही अपने तरफ से हर वह सम्भव प्रयास किया है जो समीक्षा और उसके सदस्यों के हित में है।

इसके सदस्यों की बात करें तो सभी सदस्य बहुत ही जागरूक, सीखने की इच्छा रखने वाले, मेहनती तथा मिलनसार है। हर सदस्य एक दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता है। जिस प्रकार परिवार में एक मुखिया की भूमिका सबको जोड़ कर रखने की होती है ठीक उसी प्रकार अध्यापकों का साथ बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। समीक्षा की सदस्या के रूप में अंत में बस इतना ही कहना चाहती हूँ कि इस परिवार में प्रेम सदा ऐसे ही बना रहे और सभी सदस्य एक दूसरे का इसी प्रकार सम्मान करते रहें।
समीक्षा अनेक ऊँचाइयों को प्राप्त करें यही कामना करती हूँ।
सभी को सस्नेह प्रेम।

वर्षा

समीक्षा केवल एक समिति ही नहीं, परिवार है जिसकी यादें सीख बन गई हैं और अंतिम जीवन के क्षितिज तक वह हमारे साथ रहेंगे। आज से अगर दो वर्ष पूर्व चलें तो मैंने समीक्षा वाद-विवाद समिति के ऑडिशन में भाग लिया था। वहाँ समीक्षा समिति की अध्यक्षा सुप्रिया ठाकुर दी थी जिन्होंने मेरा काफी समर्थन किया। हर एक सदस्य का ज्ञान मानो किसी विशाल समूह जैसा था। समीक्षा एक आवाज है, समीक्षा एक गूँज है, समीक्षा तर्कों का एक विशाल सागर है। यहाँ से मैंने बहुत कुछ सीखा है। जितना इस समूह की गहराई में जाओगे वहाँ से उतना ही पाओगे। यदि वर्तमान समय की बात की जाए तो अपने विचारों को किसी के सामने रखने का बहुत महत्त्व होता है जो मैंने यहाँ आकर सीखा है। समीक्षा ने मुझमें पचास, सौ या हज़ारों लोगों के सामने बोलने का आत्मविश्वास जगाया है।

वर्तमान समय 2019--0 की अध्यक्षा दीपांशी एवं उपाध्यक्षा खुशबू ने इसको आगे ले जाने में काफी मेहनत की है और उन्होंने हमेशा सबको अपने अध्यक्ष वाले लहजे से नहीं बल्कि एक मित्र वाले लहजे से समझाने का प्रयत्न किया है। हर एक सदस्य समीक्षा का मोती है और हमारी अध्यक्षा एक मजबूत डोर जो सबको एक साथ समेटकर समीक्षा का निर्माण कर रही है। समीक्षा का सफर बड़ा सुहावना था पर अलविदा का दिन भी आना था।

शिवानी सिंह

एक छोटा सा लम्हा है, जो खत्म नहीं हो सकता
मैं कहीं भी चली जाऊँ, मेरे जहन से यह धूमिल नहीं हो सकता।
कुछ ऐसा ही सफर रहा मेरा समीक्षा हिंदी वाद-विवाद समिति में, मुझे आज भी वो दिन याद है जब मैंने अपने वाद-विवाद के शौक के कारण यूँ ही पंजीकरण करा लिया था पर धीरे-धीरे जब मैंने सफर पर चलना शुरू किया तो मुझे इस समिति ने मान-सम्मान के साथ-साथ परिवार से इतने दूर एक परिवार का प्यार भी दिया जो मेरे लिए अमूल्य है। कॉलेज के अपने प्रथम वर्ष में मुझे इस समिति से अपने सीनियर्स का बहुत प्यार मिला और जब मैंने अलग-अलग महाविद्यालयों में प्रतियोगिता के लिए जाना शुरू किया तो अलग-अलग लोगों और व्यक्तित्व से मेरा सामना हुआ जिनसे मैंने बहुत कुछ सीखा, यह सब कुछ इस समिति की ही देन है। समीक्षा से मुझे ढेरों प्यार और अपनापन मिला है, जो मेरे लिए एक अमूल्य धन के समान है। गार्गी के अपने तीन साल के सफर में जो समय मैंने समीक्षा समिति के साथ व्यतीत किया वे मेरे जीवन के सबसे खुशनुमा पलों में से एक है। समीक्षा ने मुझे एक स्वावलंबी व्यक्तित्व प्रदान किया और दृढ़ निश्चयी बनाया। समीक्षा ने मुझे यह सिखाया कि अगर आपके पास प्रतिभा है तो जीवन की हर चुनौती आपके सामने छोटी है। कॉलेज के अपने तीसरे वर्ष में समीक्षा के जूनियर्स से जो मुझे प्यार मिला वह मेरे लिए बेश्कीमती है। अंत में मैं बस यही कहना चाहूँगी कि समीक्षा में शामिल होने का मेरा निर्णय, मेरे जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण और खुशनुमा निर्णयों में से एक है, जिसने मुझे बहुत कुछ दिया।

खुशबू

३-४ मार्च को दिल्ली कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स द्वारा आयोजित संसदीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में मैं विजेता दल (क्रॉस टीम) रही। इस जीत का बहुत महत्त्व है, हो भी क्यूँ न, आखिर पहली जीत (संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता के रूप में) जो थी। हालांकि ये एक शुरूआत है लेकिन इस शुरुआत तक का सफर भी काफी उतार-चढ़ाव से भरपूर रहा है। जाने कितनी ही हार के बाद, कितनी ही असंतुष्ट स्थितियों के बाद, निराशाओं व हताश होने के बाद आखिरकार ये वक़्त आया जब एक पी.डी जीत का ख़िताब मिला है। इस जीत में अनेक नाम है कुछ का सकारात्मक योगदान रहा तो कुछ का नकारात्मक, लेकिन हाँ योगदान काफी लोगों का रहा।

सबसे पहले समीक्षा समिति की शुक्रगुजार हूँ कि मुझे वक्ता से डिबेटर बनाया। सुप्रिया दी, श्रेया दी, रागिनी दी, निधि दी- ये वे सीनियर्स है जिन्होंने कभी हार के बाद उदास नहीं होने दिया। दीपांशी दी और शिवानी दी जो इस जीत के पीछे सबसे बड़े दो कारण है जिन्होंने सर्किट से परिचित कराया और वाद-विवाद की तकनीकी दांव-पेच सिखाए। सभी समीक्षा जूनियर्स का भी धन्यवाद जिन्होंने मुझपर अटूट विश्वास और प्यार बनाए रखा। अंत में सबसे महत्वपूर्ण पार्वती मैम और मीना मैम को दिल से धन्यवाद जिनके आशीर्वाद और प्रोत्साहन के बिना ये जीत संभव न होती। यह जीत और यह आत्मविश्वास दोनों ही समीक्षा समिति की देन है जिसके लिए मैं सदा आभारी रहूँगी।

योगदानकर्ता

मितिक्षा

सीता

अनुभूति

संजीवनी

प्रिया

नीलम

शारदा

शिवानी सिंह

वर्षा

मिहिका भौमिक

संपादक – मंडल

दीपांशी गुप्ता

खुशबू

दिव्यांशी पांडे

मीनाक्षी उपाध्याय

ईशा अग्रवाल

विशेष क्रेडिट

छाया (मधुबनी बॉर्डर)

शिवानी बंसल (पत्रिका कवर)